

## प्रभावी लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की ओर

यह एडिटरियल 11/12/2022 को 'हृद्दि बिजनेस लाइन' में प्रकाशित "Why local bodies are financially starved" लेख पर आधारित है। इसमें भारत में शहरी स्थानीय निकायों और संबंधित चुनौतियों के बारे में चर्चा की गई है।

### संदर्भ

**लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण** (Democratic decentralisation) प्रायः इस धारणा पर आधारित होता है कि यह स्थानीय राजनीतिक निकायों को ऐसे संस्थानों के निर्माण के लिये सशक्त करता है जो स्थानीय नागरिकों के प्रति अधिक जवाबदेह हों और स्थानीय आवश्यकता एवं प्राथमिकताओं के लिये अधिक उपयुक्त हों।

- 73वाँ और 74वाँ संविधान संशोधन पारित करना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था जहाँ पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) और शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) को स्वशासन के एजेंट के रूप में चिह्नित किया गया तथा उन्हें आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिये योजना तैयार करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई।
- अगले वर्ष (वर्ष 2023) भारत इन संविधानिक संशोधनों के लागू होने की 30वीं वर्षगांठ मनाएगा। यद्यपि देश में वास्तव में विकेंद्रीकृत स्थानीय निकायों के निर्माण की दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

### लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण क्या है?

- यह केंद्र और राज्य के कार्यों एवं संसाधनों को नचिले स्तरों पर नरिवाचित प्रतनिधियों को हस्तांतरित करने की प्रक्रिया है ताकि शासन में नागरिकों की अधिक प्रत्यक्ष भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सके।
- 73वें और 74वें संशोधनों ने भारत में संविधानिक रूप से पंचायती राज संस्थाओं की स्थापना कर नरिवाचित स्थानीय सरकारों के रूप में पंचायतों और नगर पालिकाओं की स्थापना को अनिवार्य कर दिया।
  - संविधान की 11वीं अनुसूची में पंचायतों की शक्तियों, प्राधिकार और उत्तरदायित्वों को संलग्न किया गया है।
  - संविधान की 12वीं अनुसूची में नगर निकायों की शक्तियों, प्राधिकार और उत्तरदायित्वों को संलग्न किया गया है।

### लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण शासन को कैसे प्रभावित करता है?

- पारदर्शिता की वृद्धि:** यह सरकार की पारदर्शिता और सरकार एवं नागरिकों के बीच सूचना के प्रवाह (दोनों दिशाओं में) को बढ़ाता है।
  - पारदर्शिता की वृद्धि होती है क्योंकि पहले की तुलना में बहुत बड़ी संख्या में लोग सरकार के कार्यकरण को और नीति एवं राजनीतिक प्रक्रियाओं से संबंधित गतिविधियों को नकटता से देख सकते हैं।
- उत्तरदायी सरकार:** जब लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण सुचारू रूप से कार्य करता है तो यह सरकार को अधिक उत्तरदायी बनाता है। सरकार की ओर से प्रतिक्रियाओं (कार्यों, परियोजनाओं) की गति और मात्रा में वृद्धि होती है।
- राजनीतिक और नागरिक बहुलवाद:** स्थानीय शासन द्वारा नागरिक समाज अधिक उत्प्रेरित एवं उत्साहित होता है और जितने अधिक लोग इससे जुड़ते हैं, शासन उतना ही अधिक सक्रिय और प्रतसिपर्द्धी होता जाता है। यह राजनीतिक और नागरिक बहुलवाद (Political and Civil Pluralism) को सुदृढ़ करता है।
- गरीबी कम करने में योगदान:** विकेंद्रीकृत प्रणालियाँ कषेत्रों या इलाकों के बीच वषिमतताओं से प्रेरित गरीबी को कम करने में मदद कर सकती हैं क्योंकि ये सभी कषेत्रों को समान प्रतनिधित्व और संसाधन प्रदान करती हैं।

### भारत में विकेंद्रीकरण से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ

- अवसंरचनागत खामियाँ:** कई ग्राम पंचायतों के पास अपने स्वयं के भवन तक का अभाव है और वे स्कूलों, आँगनबाड़ी और अन्य संस्थाओं के साथ जगह साझा करते हैं।
  - कुछ के पास अपना भवन है तो उनमें शौचालय, पेयजल और बजिली जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है।



